नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

रक्षा उत्पादन में भारत की नई उड़ान

8 अक्टूबर बुधवार को देश में भारतीय वायु सेना दिवस मनाया गया. जाहिर है यह अवसर केवल हमारे सैनिक सामर्थ्य का उत्सव नहीं, बल्कि भारत की तकनीकी आत्मनिर्भरता की दिशा में हो रहे 'मेक इन इंडिया' रक्षा उत्पादन मॉडल की वास्तविक परीक्षा का दिन भी था. आसमान में गरजते तेजस, राफेल और सुखोई लड़ाकू विमानों की उड़ानें न केवल शौर्य का प्रतीक हैं, बल्कि यह भी दिखाती हैं कि भारत अब केवल 'खरीदार देश' नहीं, बल्कि 'निर्माता राष्ट्र' बनने की राह पर है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहल पर 2014 में शुरू हुआ 'मेक इन इंडिया' अभियान अब रक्षा क्षेत्र में नई ऊँचाइयों को छू रहा है. बीते एक दशक में भारत ने रक्षा उत्पादन के क्षेत्र में कई ऐतिहासिक निर्णय लिए हैं - विदेशी निर्भरता घटाने, निजी उद्योगों को अवसर देने और निर्यात बढ़ाने की दिशा में. यह परिवर्तन मात्र आर्थिक नहीं, बल्कि रणनीतिक है.

आज भारत की तीनों सेनाओं - थल, नौसेना और वायु सेना के आधुनिकीकरण का केंद्र स्वदेशी उत्पादन है. तेजस लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट , प्रलय और अग्नि मिसाइलें, अर्जुन टैंक, और एचएएल द्वारा विकसित हल्के हेलीकॉप्टर- यह सब उस आत्मनिर्भरता की झलक है जिसकी कल्पना दशकों से की जा रही थी. परंतु इस परिवर्तन की असली कसौटी अब है- क्या हम इसे स्थायी औद्योगिक क्षमता में बदल पा रहे हैं? वायु सेना दिवस का यह वर्ष इस मायने में खास है कि भारत ने रक्षा निर्यात में रिकॉर्ड बढ़त हासिल की है. वित्त वर्ष 2024-25 में भारत ने करीब रु. 21,000 करोड़ का रक्षा निर्यात किया, जो अब तक का सर्वोच्च आंकड़ा है. इससे स्पष्ट है कि भारत अब विश्व के टॉप 25 रक्षा निर्यातक देशों की सूची में अपनी जगह बनाने की दिशा में अग्रसर है.

इस सफलता के पीछे केवल सरकारी नीतियाँ नहीं, बल्कि निजी क्षेत्र की सक्रिय भागीदारी भी अहम है. टाटा, लार्सन एंड टुब्रो, महिंद्रा डिफेंस, और अदानी डिफेंस जैसी कंपनियाँ अब रक्षा विनिर्माण में ठोस योगदान दे रही हैं. सरकार ने डिफेंस इंडस्ट्रियल कॉरिडोर (तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश में) स्थापित कर इस क्षेत्र में निवेश को नई गति दी है. इसके साथ ही, डिफेंस एक्सपो जैसे आयोजनों ने भारत को वैश्विक रक्षा बाजार में एक नए विश्वसनीय साझेदार के रूप में प्रस्तुत किया है. फिर भी चुनौतियां शेष हैं. अभी भी उन्नत जेट इंजन, रडार सिस्टम और उच्चस्तरीय इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणालियों में हम विदेशी सहयोग पर निर्भर हैं. 'मेक इन इंडिया' की सच्ची सफलता तभी मानी जाएगी जब भारत अपने स्वदेशी इंजन, रडार और ड्रोन तकनीक के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन सके. रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन और निजी कंपनियों के बीच और गहरी साझेदारी की आवश्यकता है.

इस वर्ष का वायु सेना दिवस हमें याद दिलाता है कि आसमान की यह ऊंचाई केवल पराक्रम से नहीं, बल्कि तकनीकी आत्मनिर्भरता से संभव होती है. हमारे सैनिकों के साहस को जितनी आवश्यकता हथियारों की है, उतनी ही उन हथियारों के पीछे के स्वदेशी ज्ञान, नवाचार और उद्योग नीति की भी है. मेक इन इंडिया रक्षा उत्पादन मॉडल अब केवल एक सरकारी अभियान नहीं, बल्कि भारत की रणनीतिक स्वतंत्रता का आधार स्तंभ बन चुका है. यह वह चरण है जहाँ देश को 'डिज़ाइन इन इंडिया' की दिशा में भी कदम बढ़ाना होगा. क्योंकि आत्मनिर्भरता केवल निर्माण नहीं, बल्कि सृजन की भी प्रक्रिया है. वायु सेना दिवस 2025 इस आत्मनिर्भर भारत की उस उड़ान का प्रतीक है, जिसमें पंख भी अपने हैं और दिशा भी अपनी. अब यह हम सबकी जिम्मेदारी है कि इस उड़ान को और ऊंचा, और स्थायी बनाया जाए- ताकि आने वाले समय में भारत का आसमान पूरी तरह स्वदेशी विश्वास से भरा हो.

जीएसटी की नई दरें किसानों के लिए वरदान

श्री शिवराज सिंह चौहान

> जैविक खेती और प्राकृतिक खेती के प्रति प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का विशेष बल रहता है. आज जब पूरी दुनिया पर्यावरण संरक्षण और टिकाऊ कृषि की ओर बढ़ रही है, ऐसे में हमारे किसानों को सस्ते दामों पर जैव-कीटनाशकों और सूक्ष्म पोषक तत्वों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए ज़रूरी 12%से घटाकर 5% किया गया है. इससे किसान रासायनिक उर्वरकों पर निर्भर रहने के बजाय धीरे-धीरे जैविक उर्वरकों की ओर बढ़ेंगे. मिट्टी की उर्वरता बढ़ेगी, धरती माँ का स्वास्थ्य सुधरेगा और साथ ही किसानों की लागत भी कम होगी. हमारे देश के किसानों की जोत का आकार छोटा है इसलिए हम इंटीग्रेटेडफार्मिंग और कृषि संबद्ध क्षेत्रों को प्रोत्साहित कर रहे हैं ताकि किसानों की आय तेजी से बढ़े.

किसान कल्याण केंद्र सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है. खेती सरल हो, उत्पादन की लागत घटे और किसान को अधिक मुनाफा हो, इसके लिए निरंतर प्रयास जारी हैं. अन्नदाताओं का जीवन बदलना और कृषि को विकसित बनाना प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का लक्ष्य भी है और संकल्प भी. उनके निर्णयों, नीतियों और योजनाओं के केंद्र में हमेशा किसान रहते हैं. हाल ही में जीएसटी परिषद द्वारा किए गए संशोधन इसी किसान हितैषी सोच को दर्शाते हैं. स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने जीएसटी में नेक्स्ट जेनरेशन रिफॉर्म का जो संकल्प लिया थाआज वह नए भारत की समृद्धि का आधार बन रहा है.

देश की आम जनता और किसानों के हित को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए जीएसटी दरों में व्यापक सुधार किए गए हैं. यह सुधार हमारी कृषि व्यवस्था को गति और किसानों को प्रगति देने वाले हैं. इन सुधारों से देश के 10 करोड़ से अधिक सीमांत किसानों को सीधा लाभ मिलेगा. पहले जहां कृषि उपकरणों पर 18% तक जीएसटी देना पड़ता था, अब यह दर घटाकर केवल 5% कर दी गई है. इसका मतलब है कि हर किसान की जेब में हजारों रुपये की सीधी बचत होगी.

उदाहरण के लिए, अगर कोई किसान 35 हॉर्सपावर का ट्रैक्टर खरीदता था तो पहले उसे लगभग 6.5लाख रुपये (अनुमानित) खर्च करने पड़ते थे. अब यही ट्रैक्टर करीब 6.09 लाख रुपये में मिलेगा और किसान को लगभग 41 हजार रुपये की बचत होगी. 45 एचपी ट्रैक्टर पर करीब 45 हजार रुपये और 50एचपीट्रैक्टर पर 53 हजार रुपये की सीधी बचत होगी.75 एचपी ट्रैक्टर पर किसानों को लगभग 63हजार रुपये का लाभ होगा. सिर्फ ट्रैक्टर ही नहीं, पावर टिलर पर करीब 12 हजार, धान रोपण यंत्र पर 15 हजार और थ्रेशर पर लगभग 14 हजार रुपये की बचतहोगी. पावर वीडर और सीड-ड्रिल जैसे उपकरणों पर भी 5 से 10 हजार रुपये तक की बचत होगी. नए सुधारों से कटाई और बुवाई की बड़ी मशीनें भी किसानों को सस्ते दरों पर उपलब्ध हो सकेंगी. 14 फीट कटर बार पर लगभग 1.87 लाख रुपये, स्क्वायरबेलर पर लगभग 94 हजार रुपये और स्ट्रॉरीपर पर करीब 22 हजार रुपये किसानों की जेब में बचेंगे. मल्चर, सुपरसीडर, हैप्पीसीडर और स्प्रेयर भी अब पहले से सस्ते हो गए हैं.

कृषि को अधिक लाभदायक बनाने के लिए मशीनीकरण आवश्यक है. स्प्रिंकलर, ड्रिपइरिगेशन, कटाई मशीन, हाइड्रोलिकपंप और कलपुर्ज़ों पर टैक्स घटने से अब सीमांत किसान भी आसानी से आधुनिक उपकरण खरीद पाएंगे. इससे श्रम लागत कम होगी, समय बचेगा और उत्पादकता बढ़ेगी. खेती के खर्च में कमी आने से स्वाभाविक रूप से किसान की आमदनी में वृद्धि होगी. ये अनुमानित कीमतें हैं. कंपनियों और राज्यों की नीतियों के आधार पर थोड़ी-बहुत भिन्नता संभव है, लेकिन यह तय है कि किसानों की लागत घटेगी और फायदा निश्चित मिलेगा.

हमारा हर कदम किसानों की समृद्धि के लिए है. किसानों को घटी हुई दरों का लाभ तुरंत मिले, इसके लिए मैंने कृषि मशीन निर्माताओं के संघों के प्रतिनिधियों के साथ भी बैठक की. यह सुधार केवल किसानों के लिए नहीं, बल्कि पूरे देश की आर्थिक संपन्नता और आत्मनिर्भरता के लिए अभिनंदनीय कदम है. कृषि की लागत घटने से किसान अपनी उपज से अधिक लाभ कमा पाएंगे जिससे उनकी आमदनी में वृद्धि होगी. इसका सकारात्मक असर लघु और कुटीर उद्योगों पर भी पड़ेगा, क्योंकि उन्हें कच्चा माल सस्ते में उपलब्ध होगा और उत्पादन लागत घटेगी. साथ ही एमएसएमई क्षेत्रों को भी बढ़ावा मिलेगा और रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे. कृषि और पशुपालन एक-दूसरे के पूरक हैं. मधुमक्खी पालन, डेयरी, पशुपालन और सहकारी समितियों को ज़रूरत में जो छूट दी गई है, उससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में नई समृद्धि आएगी.

(लेखक भारत सरकार में कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री हैं)

ग्वालियर चंबल डायरी

संघ के कार्यक्रम में जाते ही लगे रुस्तम की घर वापसी के कयास

हरीश दुबे

इस सदी के शुरुआती दशक में चंबल की राजनीति में बड़ा चेहरा रहे रुस्तम सिंह के एक बार फिर भाजपा में शामिल होने की चर्चाएं राजनीतिक वीथिकाओं में सरगर्म हैं. हालांकि पहले भी उनकी घर वापसी के कयास लगते रहे हैं लेकिन ताजा अटकलों ने तब जोर पकड़ा जब वे संघ के शताब्दी वर्ष पर आयोजित पथ संचलन के बाद बौद्धिक कार्यक्रम में अपने पुत्र राकेश सिंह के साथ शामिल हुए. पिता पुत्र लगभग एक घंटे तक सामान्य अतिथि की तरह संघ कार्यकर्ताओं तथा गणमान्य नागरिकों के बीच मौजूद रहे. हालांकि कुछ लोग इसे पूर्व मंत्री का व्यक्तिगत मामला बता रहे हैं लेकिन कांग्रेस की तरफ से प्रतिक्रिया आई है कि रुस्तम सिंह और उनके बेटे यदि भाजपा में लौटते हैं तो इसमें कोई अचरज वाली बात नहीं है क्योंकि भाजपा रुस्तम सिंह का पुराना घर है. कांग्रेस यह भी मानती है कि रुस्तम व उनके पुत्र राकेश सिंह के भाजपा में रहने अथवा न रहने से राजनैतिक रूप से कुछ खास प्रभावित नहीं होगा. रुस्तम सिंह तत्कालीन भाजपा सरकार में वजनदार महकमों के कैबिनेट मंत्री रहे हैं लेकिन बाद में सत्तारूढ़ दल से उनकी पटरी नहीं बैठी. पुलिस के आईजी जैसी सुविधाजनक नौकरी छोड़कर अनिश्चित भविष्य वाले सियासत के सफर पर चलने वाले रुस्तम सिंह की गुर्जर समाज में पैठ को उनके विरोधी भी कबूलते हैं, हालांकि उनकी चुनावी ट्रैक रिपोर्ट में पराजय भी दर्ज हैं.

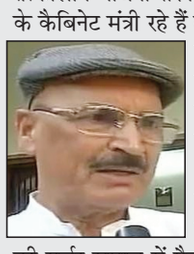

निशाने पर आ गए अनिल मिश्रा

हाईकोर्ट बार के अध्यक्ष रह चुके सीनियर एडवोकेट अनिल मिश्रा के परिवार के तीन सदस्यों को सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट के जज रहने का सुअवसर मिला है. अनिल मिश्रा ने भी वकालात में खूब नाम कमाया लेकिन अब अपने अंबेडकर विरोधी वक्तव्यों के चलते न सिर्फ दलित ओबीसी संगठनों और कांग्रेस के निशाने पर आ गए हैं बल्कि इन संगठनों के चौतरफा दवाब और धरना प्रदर्शनों के चलते पुलिस प्रशासन को भी उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज करना पड़ी है. एफआईआर दर्ज होते ही उन्होंने पुलिस प्रशासन को अपनी ताकत दिखाने की भी कोशिश की. कई ब्राह्मण और हिन्दू संगठनों के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं के साथ वे खुद ही गिरफ्तारी देने के लिए एसपी दफ्तर पहुंच गए लेकिन प्रतीत होता है कि प्रशासन त्यौहारों के मौसम में शहर के अमन चैन को अशांति का ग्रहण लगाना नही चाहता. यही वजह रही कि यह दलील देकर उन्हें गिरफ्तार नहीं किया गया कि उनके द्वारा सोशल मीडिया पर की गई टिप्पणियों और वायरल हुए वीडियो की जांच चल रही है. यह पूरा मामला ग्वालियर हाईकोर्ट परिसर में अंबेडकर प्रतिमा की स्थापना से जुड़ा है. प्रतिमा लगाने के मुद्दे पर सिर्फ वकील ही नहीं बल्कि बार के पदाधिकारी भी दो गुटों में बट गए हैं. हाईकोर्ट परिसर के बाहर भीम आर्मी के एक पूर्व पदाधिकारी के साथ मारपीट भी हो चुकी है. एडवोकेट मिश्रा अंबेडकर प्रतिमा का विरोध करने वाले पक्ष का नेतृत्व कर रहे हैं. पिछले दो माह में हालात कई दफा तनावपूर्ण हो चुके हैं लेकिन प्रशासन बेहद सतर्कता से परिस्थितियों को संभालने में जुटा है.

व्यापारियों और अफसरों में मतभेद

सवा सौ साल की शानदार विरासत रखने वाले ग्वालियर व्यापार मेला के शुरू होने में बमुश्किल ढाई महीना बचा है लेकिन मेला प्राधिकरण और व्यापारियों के बीच गरमाए मतभेद सुलटने का नाम नहीं ले रहे. मेला व्यापारियों और व्यापारियों के दरम्यान अब तक कम से कम आधा दर्जन बार बैठकें हो चुकी हैं लेकिन दुकानों की नई आवंटन नीति को लेकर दोनों पक्ष एकराय नहीं हो पा रहे.

अब सिंधिया के खिलाफ बोलने लगे स्वामी

स्वामी आनंद स्वरूप अभी तक आरक्षण, अंबेडकर एवं सवर्ण सोच से जुड़ी बेबाक टिप्पणियों को लेकर विवादों में रहते थे, कई दलित संगठन उनके खिलाफ कार्रवाई की मांग भी प्रशासन से कर चुके हैं लेकिन स्वामी ने अब सीधे तौर पर सिंधिया के ही खिलाफ मोर्चा खोल दिया है. ग्वालियर में बन रहे अंबेडकर धाम के लिए तेरह करोड़ और मंजूर किए जाने पर सिंधिया द्वारा खुशी जताए जाने पर स्वामी न सिर्फ नाराज हैं बल्कि बहुत तीखे शब्दों में सिंधिया के खिलाफ सोशल मीडिया पर टिप्पणी की है. सिंधिया के अनुयायियों का नाराज होना स्वाभाविक था. सिंधिया समर्थकों की ओर से बाल खांडे ने पलटवार करते हुए न सिर्फ यह कहा है कि स्वयं को स्वामी बताने वाले व्यक्ति के मुंह से ऐसे शब्द शोभा नहीं देते हैं बल्कि यह भी चेतावनी दी है कि फिर ऐसे बयान आए तो करारा जवाब मिलेगा.

कैसी दुविधा! गायब हुआ आनंद का शिधा

महाराष्ट्र की जनता इस बार दिवाली का आनंद नहीं ले पाएगी, क्योंकि सरकार ने आनंद का शिधा (राशन) नहीं देने का फैसला किया है. इसके पहले सिर्फ 100 रुपए में त्योहार पर आनंद का राशन उपलब्ध कराया जाता था, जिसमें खाद्य तेल, चना दाल और शक्कर का एक-एक किलो का पैकेट किट के रूप में राशन कार्ड धारकों को दिया जाता था. अब मुद्दा यह है कि जनता आनंदित कैसे होगी? एक समय था, जब कहा जाता था- आनंदी आनंद गडे, इकडे तिकडे चोहीकडे ! मुंबई में आनंद की कमी इसलिए नहीं थी, क्योंकि तब वहां देव आनंद, विजय आनंद और चेतन आनंद थे. कितने ही लोग अपने बेटे का नाम आनंदराव या आनंदकुमार रखा करते थे. बेटी का नाम आनंदीबाई रखा जाता था ताकि वह हमेशा आनंदित रहे. वैसे आनंद की उपज मन से होती है. छोटी छोटी खुशियां मन को आनंदानुभूति देती हैं. बड़े-बड़े उद्योगपतियों को व्यवसाय की चिंता में नींद नहीं आती जबकि कम पढ़े-लिखे गरीब भी अपनी झोपड़ी में आनंदित रहते हैं और दिन भर परिश्रम के बाद आनंद से टूटी खाट पर आनंद की नींद लेते हैं. साधु-संन्यासियों को भजन में आनंद आता है, तो नेताओं को राजनीतिक उखाड़-पछाड़ करने, आंदोलन करवाने में आल्हाद या आनंद महसूस होता है. कभी-कभी उनके हवा-हवाई वादे भी जनता को आनंदित कर देते हैं. एक ऐसा ही वादा था- हमारी सरकार बनने पर विदेश से काला धन लाकर हर देशवासी के खाते में 10 लाख रुपये जमा करा दिए जाएंगे. यह सुनते ही मतदाता आनंदमग्न हो गए और नेता व उसकी पार्टी को बहुमत से जिता दिया. बाद में उस वादे की याद दिलाने पर कहा गया कि वह तो चुनावी जुमला था. भोली-भाली जनता को आनंदित करने के लिए जुमला या फूलों का गमला पर्याप्त है. आनंद के लिए अंग्रेजी में प्लेजर, ब्लिस या हैपीनेस जैसे शब्द हैं.

भारत विश्व की चौथे नंबर की इकोनॉमी है, लेकिन फिर भी यहां 80 करोड़ लोगों को मुफ्त अनाज देकर मोदी सरकार आनंदित करती रहती है. बिहार में महिलाओं के खाते में 10,000 रुपये जमा कर उन्हें चुनाव के पूर्व आनंदित किया जा रहा है. महाराष्ट्र में लाडकी बहीण योजना ने अपात्र महिलाओं को भी भरपूर आनंद दिया

निशानेबाज

फैशन व सरकार बदलते देर नहीं लगती फ्रांस की मुसीबत नहीं टलती

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, फ्रांस के गणतंत्र को जनाक्रोश की फांस चुभी हुई है, जो उसे लगातार गहरी टीस दिए जा रही है. वहां के नए प्रधानमंत्री सेबेस्टियन लेकानूं ने चुनौतियों का मुकाबला करने के बजाय अपने पद से इस्तीफा दे दिया. अब तो फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों की कुर्सी पर भी खतरे के बादल मंडरा रहे हैं.

हमने कहा, फ्रांस की राजधानी पेरिस है, जिसे वहां के लोग पारी कहते हैं. फ्रांस की जनता अपनी फ्रेंच भाषा पर बहुत गर्व करती है और अंग्रेजी को गंवारों की भाषा मानती है. फ्रेंच और मराठी दोनों में समानता यह है कि दोनों भाषाओं में 3 लिंग होते हैं-स्त्रीलिंग, पुरुष लिंग व उभय लिंग. फ्रेंच में कुत्ते को ली शां और बिल्ली को ली शीं कहा जाता है. अभिवादन के लिए बां ज्यू कहते हैं.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, हम फ्रांस की राजनीतिक अस्थिरता की बात कर रहे हैं. वहां हमेशा से ऐसा होता आया है. जब वहां 16वें लुई का शासन था, तब भयंकर अकाल पड़ा था. लोगों की भारी भीड़ महल के सामने जमा होकर

शोर मचाने लगी. तब महारानी मेरी एंतोनेत ने अपने प्रधानमंत्री से पूछा कि यह लोग क्यों चिल्ला रहे हैं, तो उसने कहा कि यह भूखे लोग ब्रेड या रोटी मांग रहे हैं और रोटी मिल नहीं रही है. इस पर रानी ने कहा, इन लोगों से कहो कि रोटी नहीं मिल रही है, तो केक खाएं! फ्रांस में नेपालियन बोनापार्ट जैसा महान सेनापति और शासक हुआ था, जिसे अपने हर सैनिक का नाम मुंहजबानी याद था. उसने यूरोप को जीत लिया था, लेकिन वारटलू की अंतिम लड़ाई में उसकी हार हुई. फ्रांस में राजनीतिक स्थिरता सिर्फ जनरल द गाल के शासनकाल में आई थी.

हमने कहा, फ्रांस के एक पूर्व राष्ट्रपति सरकोजी थे. उन पर भ्रष्टाचार के आरोप में मुकदमा चल रहा है. उन्हें भी पद से हटना पड़ा था. लोगों ने उनसे कहा, यहां से सरको जी, हटो जी, भागो जी, गद्दी खाली करो जी!

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, इंग्लैंड में बकिंघम पैलेस है तो फ्रांस में एलिसी पैलेस, लेकिन ब्रिटेन के समान उस पैलेस में कोई राजा नहीं रहता. दोनों देशों के बीच इंग्लिश चैनल है. भारत के मिहिर सेन और आरती साहा ने इंग्लैंड के डोवर बंदरगाह से फ्रांस के कैले बंदरगाह तक लगातार तैरकर यह समुद्र पार किया था. फ्रांस का आइफिल टॉवर मशहूर है. पेरिस विश्व की फैशन कैपिटल है. वहां फैशन और सरकार बदलते जरा भी देर नहीं लगती.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12045 - डॉ. सागर खादीवाला

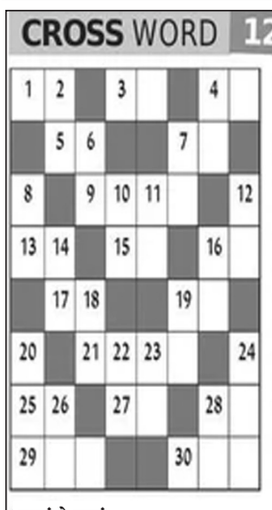

ऊपर से नीचे

2. जिसमें पूरे के अतिरिक्त चौथाई और जुड़ा हो 4. वाष्प 6. सत्य 7. आच्छादित करना 8. वह सीधी रेखा जो किसी वृत अथवा गोल क्षेत्र के बीच में होती हुई गई हो 10. शहद 11. कण, कान का समास में व्यवहृत संक्षिप्त रूप 12. खालिस, विशुद्ध, व्यवहार में सच्चा 14. चिराग, दीया 16. दौलत, द्रव्य, संपत्ति 18. तोता, सुग्गा 19. विदित, जाना हुआ 20. शरीर पोंछने का विशेष प्रकार का अंगोछा 22. जूट 23. कोई बात बार-बार दोहराना 24. याद न रखना या याद न रहना 26. पत्र, चिट्ठी (उर्दू) 28. सूर्य प्रकाश, सुगंध के लिए गंध द्रव्यों को जलाकर उठा हुआ धुआं

बाएं से दाएं

1. राजा उग्रसेन का पुत्र जिसका वध कृष्ण ने किया था 3. बाण नदी का किनारा, तट 4. सावन के बाद और कुंवार के पहले का महीना, भाद्रपद 5. निवास, रहना 7. मुद्रण, किसी उभरे हुए या खुदे हुए ठप्पे का चिन्ह 9. जगमगाना, प्रकाशित होना 13. शताब्दी, सैकड़ा (उर्दू) 15. लगन, गाने की तर्ज 16. पृथ्वी 17. मवेशी, चौपाया 19. बोध, जानना 21. व्यायाम, बहुलता (उर्दू) 25. लिखने वाला, लेखक 27. अभिनेता, एक जाति 28. रज, गर्द 29. कष्ट, पीड़ा 30. बोना, लगाना

Solution 12044

प	क्ष	हा	र		अ	थ	क
दा	र		ज	वा	न		वा
र्थ		भु	त		ल	क	ड़ी
	स	मा	प	न		स	
स	र	प	ट		प्र	क	ट
ह	ल	क		ब	च	ना	
	रे		त	र	ल		ख्य
रू	खा	र	ना		न	सी	ब

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में अनावश्यक वाद विवाद होगा. मन में तनाव रह सकता है. व्यर्थ चिन्ताओं से कार्य में व्यवधान आयेगा. व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी. आकस्मिक क्रोध की स्थिति बन सकती है. शुभ समाचार प्राप्त होने का योग है. वर्ष के अन्त में नये स्त्रोतों मेंवृद्धि होगी. रूके कार्यो में गति आयेगी. धार्मिक कार्यो में व्यय होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को आय के नवीन स्त्रातों में वृद्धि होगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों का अधिकारी के सहयोग से लाभ होगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को अनावश्यक विवादहो सकता है. सिंह राशि के व्यक्तियों के रूके कार्यो में गति आयेगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को शुभ समाचार मिलेगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को व्यर्थ का वाद विवाद से मुक्ति मिलेगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को भागदौड़ अधिक होगी. अत्याधिक क्रोध की स्थिति न आने दें.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, स्वस्थ्य, हष्टपुष्ट एवं चंचल बुद्धिमान एवं परोपकारी होगा, रचनात्मक कार्यो में विशेष निपुण होगा, माता पिता का विशेष भक्त होगा, मित्रों की संख्या सीमित होगी, जन्म स्थान से दूर रहकर उन्नति करेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

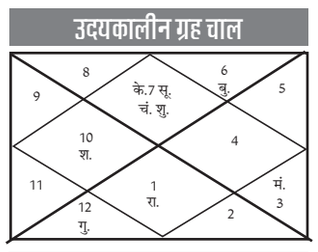

पंचांग

रा.मि. 17 संवत् 2082 कार्तिक कृष्ण तृतीया गुरूवासरे रात 2/49, भरणी नक्षत्रे रात 12/32, वज्र योगे रात 2/47, वणिज करणे सू.उ. 6/12, सू.अ. 5/48, चन्द्रचार मेष रातअंत 6/6 से वृषभ, शु.रा. 1, 3, 4, 7, 8, 11 अ.रा. 2, 5, 6, 9, 10,1 2 शुभांक- 3, 5, 9.

व्यापार भविष्य

कार्तिक कृष्ण तृतीया को भरणी नक्षत्र के प्रभाव से पीली, काली, रंग की वस्तुओं का जोरदार उछाल आयेगा, किन्तु आज के बने भाव घटेंगे, सफेद रंग की वस्तुओं का समावेश होगा. व्यापारी वर्ग बाजार का रूख देखकर कार्य करें. भाग्यांक 2694 है.

मेष- उच्च अध्ययन पर विचार होगा, धार्मिक कार्यो में रूचि रहेगी, जमीन जायजाद प्राप्तर्टी आदि के कार्यो में सफ्लता मिलेगी, सुख शांति में वृद्धि होगी.

वृषभ- बुजुर्गो के स्वास्थ्य का ध्यान रखें, अधिकारी वर्ग प्रसन्न रहेगा, व्यापारिक क्षेत्र में अत्याधिक विश्वास न करें, खरीदी बिकी के कार्य में व्यस्त रहेंगे.

मिथुन- साझेदारी में बड़ी योजना शुरू कर सकते हैं, पुराने मित्रों से भेंटवार्ता होगी, आर्थिक मदद मिलेगी, परिश्रम अधिक करना होगा.

कर्क- कुछ लोग आपको अंधेरे में रखकर नुकसान पहुंचा सकते हैं, अधिकारियों से मदद मिलेगी, नवीन योजनाओं में संलग्नता रहेगी.

सिंह- कानूनी मामलों में सावधानी से निर्णय लेने की जरूरत है, गफ्लतबाजी से बचना चाहिए, मित्र वर्ग मदद करेंगे, व्यर्थ वाद विवाद से बचें.

कन्या- बने बनाये कार्यो में अचानक व्यवधान आ सकता है, मित्रों का सहयोग रहेगा, नवीन योजना बनेगी. दिन के उत्तरार्ध में कष्ट हो सकता है.

तुला- आर्थिक कार्यो में सफ्लता मिलेगी, जोखिम के कार्यो में रूचि रहेगी, व्यापार में उन्नति का योग है, .यश प्राप्त होगा. मित्र मिलन होगा.

वृश्चिक- बीती बातों को याद करके निजी संबंध में कटुता बढेगी, लाभदायक अवसर मिलेगा, नये कार्य को जहां तक बने टालना हितकर रहेगा.

धनु- अटका धन मिलने के आसार हैं, सामाजिक प्रतिष्ठा, मान सम्मान व यश मिलेगा, अनावश्यक विवादों को टालें, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी.

मकर- सफ्लता के लिये कार्यो में गति बढ़ायें, जमीन जायजाद के कार्यो में सफ्लता मिलेगी, मित्रों का सहयोग रहेगा, अतिथि आगमन का योग है.

कुम्भ- मित्रों की मदद से बिखरे कार्य समेटने में मदद मिलेगी, कार्यो में सफ्लता मिलेगी, रूका धन प्राप्त होगा, निजी पुरूषार्थ बढ़ेगा.

मीन- मित्रों की कहासुनी का मलाल रहेगा, आपकी बुद्धिमानी एवं सूझबूझ से शत्रुवर्ग परास्त होगा, कार्यक्षमता में वृद्धि होगी, यात्रा एवं लाभ मिलेगा.

SUDOKU 7177

				6	8	5		
	1						2	
		2						8
			4					9
6				5				1
2					3			
5						3		
	8						6	
		4	9	1				

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7176

2	4	6	7	9	3	5	8	1
3	1	5	2	8	6	4	7	9
7	8	6	1	5	4	2	3	6
6	5	7	9	3	8	1	4	2
9	3	1	4	7	2	8	6	5
4	2	8	6	1	5	7	9	3
1	9	2	3	4	7	6	5	8
5	7	3	8	6	1	9	2	4
8	6	4	5	2	9	3	1	7